18-09-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – बाप की आश है बच्चे पूरा-पूरा नष्टोमोहा बनें, जब पक्का वायदा करें – बाबा, आप हमारे, हम आपके, तब सच्ची प्रीत जुटे''

प्रश्न:- रूद्र शिवबाबा द्वारा रचे हुए यज्ञ और मनुष्यों द्वारा रचे जा रहे यज्ञों में मुख्य अन्तर क्या है?

उत्तर:- मनुष्य जो भी यज्ञ रचते, उसमें जौं-तिल आदि स्वाहा करते, वह मेटीरियल यज्ञ हैं। बाप ने जो यज्ञ रचा है यह अविनाशी ज्ञान यज्ञ है, इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जाती है। 2-वह यज्ञ थोड़े समय तक चलते, यह यज्ञ जब तक विनाश न हो तब तक चलता रहेगा। जब तुम बच्चे कर्मातीत अवस्था तक पहुँचेंगे तब यज्ञ की समाप्ति होगी।

गीत:- निर्बल से लड़ाई बलवान की...

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) इस अविनाशी ज्ञान यज्ञ में अपने इस रथ सहित सब कुछ स्वाहा करना है। सर्विस के लिए बहुत-बहुत चुस्त और फुर्त बनना है।

2) माया कितनी भी गर्म हो, सावधान रह उसके थप्पड़ से स्वयं को बचाना है। घबराना नहीं है।

वरदान:- दया भाव को धारण कर सर्व की समस्याओं को समाप्त करने वाले मास्टर दाता भव

जिन आत्माओं के भी सम्पर्क में आते हो, चाहे कोई कैसे भी संस्कार वाला हो, आपोजीशन करने वाला हो, स्वभाव के टक्कर खाने वाला हो, क्रोधी हो, कितना भी विरोधी हो, आपकी दया भावना उसके अनेक जन्मों के कड़े हिसाब-किताब को सेकण्ड में समाप्त कर देगी। आप सिर्फ अपने अनादि आदि दातापन के संस्कारों को इमर्ज कर दया भाव को धारण कर लो तो ब्राह्मण परिवार की सर्व समस्यायें समाप्त हो जायेंगी।

स्लोगन:- अपने रहमदिल स्वरूप वा दृष्टि से हर आत्मा को परिवर्तन करना ही पुण्यात्मा बनना है।

19-09-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – याद के पुरुषार्थ से ही कर्मातीत बनेंगे, इसलिए कभी अपने को मिया मिट्ठू नहीं समझना, याद के बल से अन्दर में जो कमियाँ हैं, उन्हें निकालते रहना''

प्रश्नः- सभी बच्चों की अवस्था को मजबूत बनाने के लिए बाप कौन-सी चैलेन्ज करते हैं?

उत्तरः- बच्चे, भोजन बनाते हुए पूरा समय याद में रहकर दिखाओ– यह बाप बच्चों को चैलेन्ज करते हैं। शिवबाबा की याद में भोजन बनायेंगे तो ताकत भर जायेगी, अवस्था बहुत अच्छी हो जायेगी। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। इसके लिए एक-दो को याद दिलाने का पुरुषार्थ करो। डबल सर्विस करनी है। कर्मणा के साथ-साथ नर से नारायण बनाने की भी सेवा करो।

गीतः- धीरज धर मनुवा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) एक-दो को बाप की याद दिलाने का पुरुषार्थ करना है। बाप, टीचर, सतगुरू तीनों को साथ-साथ याद करना है। भोजन बनाते वा खाते समय याद में जरूर रहना है।

2) सच्चे दिल से बाप की सर्विस में लगना है। काँटों को फूल, मनुष्य को देवता बनाने की सेवा करनी है।

वरदानः- व्यक्त भाव से ऊपर रह फरिश्ता बन उड़ने वाले सर्व बन्धनों से मुक्त भव

देह की धरनी व्यक्त भाव है, जब फरिश्ते बन गये फिर देह की धरनी में कैसे आ सकते। फरिश्ता धरती पर पाँव नहीं रखते। फरिश्ता अर्थात् उड़ने वाले। उन्हें नीचे की आकर्षण खींच नहीं सकती। नीचे रहेंगे तो शिकारी शिकार कर देंगे, ऊपर उड़ते रहेंगे तो कोई कुछ नहीं कर सकता। इसलिए कितना भी कोई सुन्दर सोने का पिंजड़ा हो, उसमें भी फँसना नहीं। सदा स्वतन्त्र, बंधनमुक्त ही उड़ती कला में जा सकते हैं।

स्लोगनः- असम्भव को सम्भव कर सफलता की अनुभूति करने वाले ही सफलता के सितारे हैं।

20-09-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – तुम्हें पुरुषार्थ कर एयरकन्डीशन की टिकेट खरीद करनी है, एयरकन्डीशन टिकेट लेना अर्थात् माया की गर्म हवा अथवा वार से सेफ रहना''

प्रश्नः- तुम बच्चों को महाविनाश का दुःख होगा या नहीं? इसका पाप किस पर चढ़ता है?

उत्तरः- तुम्हें इस महाविनाश का दुःख हो नहीं सकता क्योंकि तुम तो फरिश्ता बनते हो। तुमको नॉलेज है कि अब सभी आत्माओं को मच्छरों सदृश्य वापिस घर जाना है। तुम्हें किसी की मौत पर दुःख नहीं होता क्योंकि तुम साक्षी हो देखते हो, तुम जानते हो आत्मा तो सदा अमर है। इस विनाश का पाप किसी पर भी नहीं लगता, यह तो जैसे लड़ाई का यज्ञ रचा हुआ है। सभी लड़ मरकर घर वापस जायेंगे। यह भी ड्रामा की भावी है।

गीतः- महफ़िल में जल उठी शमा...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) शिवबाबा से मिला हुआ खज़ाना सभी को बाँटना है। अविनाशी ज्ञान-रत्नों का दान करके 21 जन्मों के लिये साहूकार बनना है।

2) अपनी अवस्था अचल-अडोल बनानी है। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी कमल फूल समान बन बाप का नाम बाला करना है। सर्विस में तत्पर रहना है।

वरदानः- संगमयुग के इस नये युग में हर सेकण्ड नवीनता का अनुभव करने वाले फास्ट पुरुषार्थी भव

संगमयुग पर सब कुछ नया हो जाता है, इसलिए इसे नया युग भी कहते हैं। यहाँ उठना भी नया, बोलना भी नया, चलना भी नया। नया अर्थात् अलौकिक। स्मृति में भी नवीनता आ गई। बातें भी नई, मिलना भी नया, देखना भी नया। देखेंगे तो आत्मा, आत्मा को देखेंगे, शरीर को नहीं। भाई-भाई की दृष्टि से सम्पर्क में आयेंगे, दैहिक संबंध से नहीं। ऐसे हर सेकण्ड अपने में नवीनता का अनुभव करना, जो एक सेकण्ड पहले अवस्था थी वह दूसरे सेकण्ड नहीं, उससे आगे हो, इसको ही फास्ट पुरुषार्थी कहा जाता है।

स्लोगनः- परमात्म प्यार द्वारा जीवन में सदा अतीन्द्रिय सुख व आनंद की अनुभूति करना ही सहजयोग है।

''मीठे बच्चे – जब तक आत्मा पार्ट में है तब तक उसे 100 परसेन्ट रेस्ट मिल नहीं सकती, रेस्ट मिलती है निर्वाणधाम में, वहाँ कोई पार्ट नहीं''

प्रश्नः- जो बच्चे चलते-चलते पढ़ाई से थक जाते हैं उन्हें फिर कौन-से संकल्प आते हैं जो विकल्प का रूप ले लेते हैं?

उत्तरः- 1. उन्हें बाप को छोड़ देने के अर्थात् फारकती देने के संकल्प आते हैं। बाबा कहते – यह संकल्प आना भी विकल्प है। ऐसा संकल्प करना भी पाप है। पढ़ाई न पढ़ना माना ही थक जाना। ऐसे बच्चे अपना खाना खराब कर देते हैं। 2. अगर किसी बात के कारण कोई मात-पिता से रूठ जाते हैं तो वह 21 जन्मों की बादशाही गँवा देते हैं।

गीतः- आज अन्धेरे में हैं इंसान...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) कम्पलीट दानी बनना है। सच्चाई से सब बाप को अर्पण कर नई दुनिया के लिए ट्रांसफर कर देना है।

2) जीते जी ट्रस्टी बनना है। कदम-कदम पर बाप से श्रीमत लेनी है। कभी भी श्रीमत से रूठ मनमत पर नहीं चलना है।

वरदानः- कम्बाइन्ड रूपधारी बन सेवा में खुदाई जादू का अनुभव करने वाले खुदाई खिदमतगार भव

स्वयं को सिर्फ सेवाधारी नहीं लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी समझकर सेवा करो। इस स्मृति से याद और सेवा स्वत: कम्बाइन्ड हो जायेगी। जब खुदा को खिदमत से जुदा कर देते हो तो अकेले होने के कारण सफलता की मंज़िल दूर दिखाई देती है इसलिए सिर्फ खिदमतगार नहीं, लेकिन खुदाई खिदमतगार हूँ – यह नाम सदा याद रहे तो सेवा में स्वत: खुदाई जादू भर जायेगा और असम्भव भी सम्भव हो जायेगा।

स्लोगनः- कर्मयोगी बनना है तो कमल आसनधारी (न्यारे और प्यारे) बनो।

''मीठे बच्चे – पद का आधार पढ़ाई पर है, पढ़कर फिर पढ़ाना है, गली-गली में जाकर बाप का परिचय देना है''

प्रश्नः- तुम बच्चों को किस इच्छा से परे रहकर सेवा में लगे रहना है?

उत्तरः- तुम रहमदिल बच्चे हो, तुम्हें किसी से पैसा लेने की इच्छा नहीं रखनी है। इस इच्छा से परे रहकर दान करने की सेवा में, दूसरों को आपसमान बनाने में लगे रहना है। बुद्धि में रहे – जिसकी तकदीर में होगा वह बीज अवश्य बोयेंगे। अगर कोई वाचा या कर्मणा सेवा नहीं कर सकते हैं तो धन से भी सहयोगी बनते हैं। गरीब बच्चे तो चावल मुट्ठी देकर महल ले लेते हैं।

गीतः- प्रीतम आन मिलो...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) रमता योगी बन सेवा करनी है। मन्सा, वाचा, कर्मणा किसी भी प्रकार की सेवा में बिज़ी जरूर रहना है।

2) रात को जागकर कमाई करनी है। नींद को जीतने वाला बनना है। मुरली किसी भी परिस्थिति में जरूर पढ़नी है।

वरदानः- अल्पकाल के संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करने वाले वरदानी महादानी भव

अल्पकाल के संस्कार जो न चाहते हुए भी बोल और कर्म कराते रहते हैं, इसलिए कहते हो मेरा भाव नहीं था, मेरा लक्ष्य नहीं था लेकिन हो गया। कई कहते हैं हमने क्रोध नहीं किया लेकिन मेरे बोलने के संस्कार ही ऐसे हैं... तो यह अल्पकाल के संस्कार भी मजबूर बना देते हैं। अब इन संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करो। आत्मा के अनादि ओरीज्नल संस्कार हैं सदा सम्पन्न, सदा वरदानी और महादानी।

स्लोगनः- परिस्थिति रूपी पहाड़ को उड़ती कला के पुरुषार्थ द्वारा पार कर लेना ही उड़ता योगी बनना है।

23-09-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – आत्मा और परमात्मा का यथार्थ ज्ञान तुम्हारे पास है, इसलिए तुम्हें ललकार करनी है, तुम हो शिव शक्तियाँ''

प्रश्नः- सबसे ऊँची मंज़िल कौन-सी है, जिसका ही तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो?

उत्तरः- निरन्तर याद में रहना – यह है सबसे ऊँची मंज़िल। याद से ही कर्मभोग चुक्तू हो कर्मातीत अवस्था होगी। जिस मात-पिता से अपार सुख मिल रहे हैं, उनके लिये बच्चे कहते – बाबा, आपकी याद भूल जाती है! वन्डर है ना। देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ चलता रहे तो याद भूल नहीं सकती।

गीतः- किसने यह सब खेल रचाया...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सवेरे-सवेरे उठ याद में बैठ कमाई जमा करनी है। अपने आप से बातें करनी हैं। देही-अभिमानी रहना है।

2) राजयोग, कर्मयोग सीखना और सिखलाना है। कभी भी तंग होकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है। बाप का रिगार्ड जरूर रखना है।

वरदानः- बाप समान बेहद की वृत्ति रखने वाले मास्टर विश्व कल्याणकारी भव

बेहद की वृत्ति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृत्ति रखना– यही मास्टर विश्व-कल्याणकारी बनना है। सिर्फ अपने वा अपने हद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं लेकिन सर्व के कल्याण की वृत्ति हो। जो अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राज़ी होकर चलने वाले हैं, वह स्व-कल्याणी हैं। लेकिन जो बेहद की वृत्ति रख बेहद सेवा में बिज़ी रहते हैं उन्हें कहेंगे बाप समान मास्टर विश्व कल्याणकारी।

स्लोगनः- निंदा-स्तुति, मान-अपमान, हानि-लाभ में समान रहने वाले ही योगी तू आत्मा हैं।

24-09-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त बापदादा" रिवाइज:22-12-95 मधुबन

''सर्व प्राप्ति सम्पन्न जीवन की विशेषता है – अप्रसन्नता मुक्त और प्रसन्नता युक्त''

- आज प्यार के सागर बापदादा अपने प्रेम स्वरूप आत्माओं को देख रहे हैं। हर एक के दिल में परमात्म प्यार समाया हुआ है। ये परमात्म प्यार प्राप्त भी एक ही जन्म में होता है।
- इस समय का गायन है कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। तो जिसको सर्व प्राप्तियाँ हैं उसके जीवन में क्या विशेषता होगी? सदा प्रसन्नता। कुछ भी हो जाये लेकिन सर्व प्राप्तिवान अपनी प्रसन्नता छोड़ नहीं सकता।
- हर एक सेवाधारी के मन में बाप का प्यार और सेवा का उमंग दोनों हैं। चाहते हैं कि याद की सीट पर अच्छी तरह से सेट होकर बैठ जायें लेकिन थोड़ा टाइम तो सेट होते हैं फिर हिलना-डुलना शुरू होता है। कारण? एकाग्रता की शक्ति, दृढ़ता की शक्ति की कमी है।
- चाहे अपना, चाहे दूसरे का स्वार्थ जब पूरा नहीं होता है तब सेवा में डिस्टर्बेन्स होती है, इसलिए स्वार्थ से न्यारे और सर्व के सम्बन्ध में प्यारे बनकर सेवा करो।
- ब्राह्मण जो सच्चे हैं, ब्राह्मण जीवन में श्रेष्ठ जीवन के लक्ष्य वाले हैं उसकी विशेषता है प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी दे रहे हो तो भी आपके चेहरे पर दु:ख की लहर नहीं आनी चाहिये। प्रसन्नचित्त। गाली देने वाला भी थक जायेगा। हो सकता है?

वरदान:- अखण्ड स्मृति द्वारा विघ्नों को विदाई देने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

संगमयुग विघ्नों को विदाई देने का युग है, जिसको आधाकल्प के लिए विदाई दे चुके उसको फिर आने न दो। सदा याद रखो हम विजयी रत्न हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान हैं – यह स्मृति अखण्ड रहे तो शक्तिशाली आत्मा के सामने माया का विघ्न आ नहीं सकता। विघ्न आया फिर मिटाया तो अखण्ड अटल नहीं कहेंगे, इसलिए सदा शब्द पर अटेन्शन दो। सदा याद में रहने से सदा निर्विघ्न रहेंगे और विजय का नगाड़ा बजता रहेगा।

स्लोगन:- ईश्वरीय सेवा में खुद को आफर करना ही बापदादा की आफरीन लेना है।